हम पंछी परदेशी मुसाफिर आये है सैलानी लिरिक्स

हम पंछी परदेशी मुसाफिर,
आये है सैलानी।

दोहा – कबीर मन पंछी भया,
भावे तो उड़ जाय,
जो जैसी संगती करें,
वो वैसा ही फल पाय।
हम वासी उन देश के,
जहाँ जाति वरण कुल नाहीं,
शब्द से मिलावा हो रहा,
देह मिलावा नाहीं।

हम पंछी परदेशी मुसाफिर,
आये है सैलानी,
रेवूँ तुम्हारी नगरी में,
जब लग है दाना पानी,
हम पँछी परदेसी मुसाफ़िर,
आये हैं सैलानी।bd।

देखे – हम परदेसी फकीर।

खेल पर खेल तू खूब कर ले,
आखिर है चौगानी,
यो अवसर थारो फेर नहीं आवे,
फेर मिलण को नाहीं,
हम पँछी परदेसी मुसाफ़िर,
आये हैं सैलानी।bd।

चेतन होकर चेत ज्यो भाई,
नहीं तो तासों हैरानी,
देखो दुनियाँ यूँ चली जावे,
जैसे नदियों का पानी,
हम पँछी परदेसी मुसाफ़िर,
आये हैं सैलानी।bd।

समस्त भजनों के लिरिक्स और विडियो बिना इन्टरनेट के भी अपने मोबाइल में देखने के लिए गूगल प्ले स्टोर या एप्पल एप्प स्टोर से 'भजन डायरी एप्प' जरुर इनस्टॉल करे। वेबसाइट - https://www.bhajandiary.com

परदेशी से प्रीत लगाईं,
डूब गई जिंदगानी,
बोल्यो चाल्यो माफ़ करज्यो,
इतनी रखना मेहरबानी,
हम पँछी परदेसी मुसाफ़िर,
आये हैं सैलानी।bd।

मनुष्य जनम महा पदार्थी,
जैसे पारस की खानी,
कहत कबीरा सुनों भाई साधो,
वाणी कोई बिरले जाणि,
हम पँछी परदेसी मुसाफ़िर,
आये हैं सैलानी।bd।

हम पँछी परदेसी मुसाफ़िर,
आये हैं सैलानी,
रेवूँ तुम्हारी नगरी में,
जब लग है दाना पानी,
हम पँछी परदेसी मुसाफ़िर,
आये हैं सैलानी।bd।

गायक – हरि पटेल।
प्रेषक – पवन दांगी।
9098006577

समस्त भजनों के लिरिक्स और विडियो बिना इन्टरनेट के भी अपने मोबाइल में देखने के लिए गूगल प्ले स्टोर या एप्पल एप्प स्टोर से 'भजन डायरी एप्प' जरुर इनस्टॉल करे। वेबसाइट - https://www.bhajandiary.com